घुरि आउ कमला

(मैथिली कथा)

पं. भवनाथ झा
एम. ए. (संस्कृत) एवं साहित्याचार्य,
प्रकाशन एवं शोध पदाधिकारी
महावीर मन्दिर, पटना
(बिहार)

Ghuri Âu Kamalã

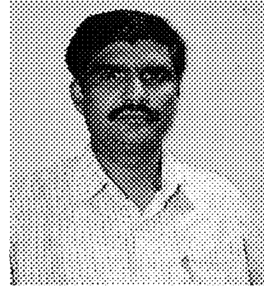
A long story in Maithily, the language of Northern Bihar, India.

Author : Bhavanath Jha

EBook generated by Bhavanath Jha

Date :- 4th May, 2014

कथाकार



नाम – पं. भवनाथ झा

पितृनाम – पं. अमरनाथ झा

जन्मस्थान – हटाढ़ रुपौली, झंझारपुर,
मधुबनी (बिहार)

जन्मतिथि – 23 सितम्बर, 1968 ई.

शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत), साहित्याचार्य

प्रकाशित रचना –

(1) **बुद्धचरितम्** (अश्वघोष कृत महाकाव्य के अनुपलब्ध अंश का संस्कृत भाषा में काव्यमय अनुवाद), महावीर मन्दिर प्रकाशन से 2013 में प्रकाशित।

(2) **भ्रूण-पंचाशिका**- (कन्या-भ्रूणहत्या विषयक 50 श्लोकों का संस्कृत प्रबन्ध काव्य)

मातृभाषा मैथिली में दर्जनों कथाओं का विभिन्न पत्रिकाओं एवं संग्रहों में प्रकाशन।

सम्पादन –

(1) **अगस्त्य-संहिता** (2) **दुर्गासप्तशती** (3) म. म. परमेश्वर झा कृत **यक्षसमागमम्**

(4) म. म. रुद्रधर कृत **पुष्पमाला** (5) म.म. पशुपतिकृत **व्यवहाररत्नावली**

(6) म.म. रुचिपतिकृत **नाह्निदत्तपञ्चविंशतिकाविवरणम्**।

धर्मायण, महावीर मन्दिर, पटना से प्रकाशित धार्मिक एवं सांस्कृतिक शोधपरक पत्रिका।

विशेष दक्षता –

मिथिलाक्षर एवं देवनागरी की पाण्डुलिपियों से सम्पादन का विशेष अनुभव।

घुरि आउ कमला

-भवनाथ 'भवन'

एक नगरमे एक राजा रहथि, हुनक यश दूर दूर धरि पसरल छलनि। से सूनि क' आन आन नगरसँ लोक सभ आबि ओतए बसए लागल। राजाक आमदनी बढ़ल गेलनि। ओ पहिनेसँ आर बेसी भोग-विलासमे लागि गेलाह। नवघरिया सभक द्वारा अपन-अपन नगरसँ आनल वस्तुजात सभक उपभोग बढ़ैत गेलनि। पछिमाहा दारू आ दछिनाहा बुलकीवाली सभक चसक लागि गेलनि। आब ओ की तँ शिकार खेलाथि नहि तँ अन्नरक कोठामे जमल रमल रहथि। राज-काजक सभटा भार देवानजी पर छलनि। ओ बड़ बुधियार रहथि आ मुँहगर लोकसभ सुखी सम्पन्न छल तें नीक जकाँ दिन बितल जाइत रहनि।

मुदा, एक बेर राजमे रौदी भेल। इनार पोखरि सभ सुखा गेलै। पुक्खो रुक्खे चल गेलै; लोक अन्न पानि बेतरेक मरए लागल। राजाकें चाँकि भेलनि। एहि आफदमे लोकक रक्षाले' पोखरि खुनबए लागलाह। राजाक बखारी खुजल। तिनसाला बासमती चाउर, जन कें बोनि भेटए लगलैक। अन्न तँ भेटलै मुदा पानि ले' लोक बेलल्ले रहल। दू चारि रजकूप टा टेक धएने छलैक। बाँकी सभमे चट्टा पड़ि गेल रहैक। माल-जाल सभ किछु दिन पोखरिक घोर मठार पानि पीलक मुदा बादमे ओहो सुखाए गेलै। चमरखल्ली गन्हाए लागल।

लोक सभकें आस लागल रहै जे पोखरि खुनाएत तँ पानिक सोह

फुटतैक। मुदा से नहि भए रहल छलैक। सोह तँ दूर, गिलगर माँटियो नै अभरि रहल छलैक। राजा सभ दिन साँझके अपनहि जा क' देखथि आ निरास भ' घूरि जाथि। लोक सभ बाजए लागल जे कमला माइक कोनो अनठ भेलनि तें रूसि रहलीह। राजाक आढ़ति भेल। सभठाम कमला माइक पूजा हुअए लागल। पाठी कबुला कएल गेल। आन-आन नगर सँ भाँति-भाँतिक धामि सभ बजाओल गेलाह। केओ धानक जुट्टी, तँ केओ डाला भरि पान आ डाला भरि मखान चढ़ओलनि, मुदा कोनो फल नहि। एक गोटे कहलनि जे कमला माइक सुखाएल धारमे सोनाक माछ गाड़ल जाए। ' ई सुनितहि रानी झट द' अपन खोपासँ माछ निकालि धामिक आगाँ राखि देलनि। एहि टोनापर सभक विश्वास रहैक। जन सभ राति क' सपना देखए लागल जे कोदारिक छओ लगितहि पानिक तेहन बमकोला छुटलै जे सभ कोदारि छोड़ि छोड़ि भागि रहल अछि। जेना धरती फाटि गेल होइक। लोकक भरोस बढ़ल गेलै। दिन बेरागन देखि क' नगरक पुबरिया धारमें एक हाथ गँहीर, एक हाथ नाम आ एक हाथ चाकर खाधि खूनल गेल। ओहिमे राजा अपनहि हाथें माछ गाड़लनि। दोसर दिन जन सभ दुन्ना जोश सँ माँटि कोड़ए लागल, मुदा सभ व्यर्थ। पोखरि एक बाँस गँहीर भ' गेल रहैक, तैयो माटि ठक ठक करै। राजा बड़ चिन्तित भेलाह। रातुक निन्न बिलाए गेलनि। कने काल ले' आँखि लागियो जाइन तँ तेहन ने' सपना देखए लागथि जे चेहा क' उठि जाथि।

एही हालमे एक राति राजा सपनामे सुनलनि जे केओ स्त्री हिचुकि हिचुकि क' कानि रहल अछि। राजा चेहा क' उठलाह। सपना सत्त बुझएलनि। भेलनि जे रानी कनैत छथि। मुदा नहि। रानी सूतलि रहथि। तखनि राजाकें छगुन्ता लगलनि। एक बेर इच्छा भेलनि जे रानीकें उठाए

दियनि, मुदा फेर सोचलनि जे इहो तँ कइएक राति सँ जगरने कए रहल छथि, तें जँ निन्न भेल छनि तँ थोड़ेक काल सुतए दैत छियनि। राजा उठलाह। चारूकात अकानलनि। कानब बंद भ' गेल रहैक। जखनि कोनो भाँज नहि लगलनि तँ फेर सूति रहलाह। थोड़े कालमे फेर कानब सुनलनि। एहिना जहाँ ने राजाकें आँखि लागनि कि कानब सुनथि। उठि क' बैसथि की ओ आवाज बिला जाइ। राजा चिन्तित भेलाह। भिनसरे धामि सभकें बजाए कहलथिन। ओ लोकनि टोना-टापरमे लागि गेलाह। कते कँटैल, बङौर आ मरिचाइ आगिमे झोंकल गेल, तकर ठेकान नहि। मुदा सभ व्यर्थ।

एहिना कतोक दिन बीति गेल। एक राति राजा के बुझएलनि जे हुनकर पलङरी लग एकटा स्त्री ठाढ़ि अछि। ओकर एक हाथमे धानक जुट्टी छैक आ दोसरमे भेटक फूल। लाल रङक पटोर पहिरने अछि आ गरदनिमे मखानक फोंकाक माला लटकल छैक। ओएह हिचुकि हिचुकि कानि रहल अछि।

राजा पुछलखिन- ''अहाँ के छी? किए कनै छी।'' ओ बजलीह- ''बाउ! हम अहाँक गोसाउनि थिकहुँ। हमर सखी कमला तमसाए पताल लोक चल गेल छथि। हमरा एसकर मोन नै लगैए तें कोंढ़ फाटि जाइ-ए।''

राजा दुनू हाथ जोड़ि हुनका प्रणाम कएल आ पुछल- ''हे माय, कमला माइ किए तमसाएल छथि?''

''अहींक किरदानी सँ'- बजलीह गोसाउनि।

''हमरासँ कोन अपराध भेलनि हे माय!'' राजा अकचकाइन पुछलथिन।

एहि पर गोसाउनि तमसाए कहल– ''सभटा हमरहि मुँहे सुनब? जाउ धारक कछेरमे सिमरक गाछक तर निशाभाग रातिमे एक गोटे भेटत ओ एड़ी सँ टिकासन धरि बुझाए देत''। ई कहि गोसाउनि जाए लगलीह। राजा हुनक पयर पकड़बा ले धड़फड़एलाह कि निम्न टूटि गेलनि।

राजा उठि क' बैसि गेलाह। सपनाक सभटा गप्प मोनमे घुरिआए लगलनि। रातुक एगारह बाजल रहैक। ओही राति सपना परतएबा ले' तरुआरि कसि लेलनि। तौनी सँ अपन सौंसे देह झाँपि साधारण लोकक बाना बनाए लेलनि। अनका केकरो नहि संग क' एसकरे कमलाक कछेर दिस विदा भेलाह। हवेली क पछवारी कात छहरदेबारी टूटल रहैक। ओही देने चोर जकाँ हाता सँ बाहर भए गेलाह।

बाहर सौसे भकोभन्न रहैक। ककरो चाल भजार नहि पाबि निश्चिन्त भ' धारक कछेर पहुँचलाह। ओतए एकटा सिमरक गाछ छल। लोक कहल करए जे जहिया कमला माइ एतए बहए लगलीह ओही दिन सँ ई गाछ अछि। ओकर जड़ि ततेक मोट भ' गेल रहय जे चारि गोटे जँ हथ्थाजोड़ी क' पजियाबए तखनि पओतैक। राजा सिमरक गाछ अंदाजि क' ओत' जएबाक बाट धएलनि। अन्हार मे देखलखिन नहि, ओतए अमती काँटक एकटा झाँङरमे ओझराए गेलाह। तौनी एक दिससँ छोड़ाबथि तँ दोसर काँटमे बझि जाइन। एही प्रयास मे लागल रहथि कि तावत कोनो पैघा चिड़ै पाँखि फड़फड़ओलक आ बुझएलनि जेना सिम्मरक गाछपर सँ केओ अथाह पानिमे छप्प सँ कूदल होअए। धार सुखाएल छलै से हिनका बुझले छलनि तें आदंकसँ सर्द भ' गेलाह। एम्हर काँट छुटबे नै कएलनि।

गिदरक झुंड सेहो फकसियारी काटए लागल। अंतमे राजा ओहि तौनीकें काँटेपर छोड़ि अपने मुक्त भ' रोलाह। ओ सिमरक गाछ लगीचेमे रहैक तें घेंघिआइते जकाँ सोर कएलनि- ''सिमर क गाछ तर केओ छह हओ।'' राजाक ई कहितहि एकटा बाझ हिनका दिस झपटल, मुदा माथक ठीक उपर देने दोसर दिस चल गेल। राजा तिलमिलाए गोलाह। पयर थरथराए लगलनि। एतबामे सिमरक गाछ परसँ केओ ठहक्का मारलक आ गरजए लागल- ''आबि गेलह तों। आबहि पड़लौक ने।''

राजा कें बुझएलनि जेना केओ डेन पकड़िक' धीचि रहल अछि। गाछक जड़िमे पहुँचलाह। ओतए एकटा खोपड़ि छल, जकर मुँहथरिपर एक घैल पानि राखल छलै। खोपड़िक भीतर एकटा डिबिया जरि रहल छलै। राजा निहुरि क' देखलनि तँ ओत' केओ नहि रहय। ओ बुझलनि जे जकरा मादे गोसाउनि कहलनि से' कतहु गेल अछि। थोड़े कालमे ध ूरि क' आबि जाएत तखनि ओकरा सँ गप्प करब। राजा ओही खोपड़ि मे जा क' बैसि गेलाह।

सिमरक गाछ परसँ फेर केओ हँसल। राजा ओहि दिस अकानलनि तँ नजरि गेलनि ओकर एकटा डारि पर, जतए मनुक्खक कंकाल उनटा लटकल छल। ओकर दुनू टा पयर एकटा डारिमे बान्हल रहैक। ओएह हँसि रहल छल।

-''के थिकाह तों, किएक हँसि रहल छह?।'' -पुछलखिन राजा। राजा डेराए गेल रहथि, तैयो अपन कुलदेवीक मंत्र जपैत साहस कएने रहथि।

ओ परेत बाजल- ''दू टा बात एके बेर पुछैत छह मूरख!' पहिने एकटाक उत्तर सुनह। तखनि दोसरक उत्तर कहबहु।''

ओ एक बेर बपहारि कटलक आ बाजल–

''हे राजा, अहाँक पाँचम पुरखाक समयक गप्प थिक। हमर जन्म एकटा मलाहक घरमे भले रहय। हमर बाबा बड़ कलामी रहथि। एक बेर जाल घुमाबथि तँ एक कट्ठा भरि छापि लेथि। एक डूबमे एक धूर मखान बहारि लेथि। आब अछि केओ एहन। केओ नहि; केओ नहि। हमर बापो तेहने। चौरी चाँचरक कमी नै रहै। सभतरि पानिए पानि। उपरमे ओइरी धान आ तरमे खलबल करैत सिंगी माँगुर आ कबै माछ। हमरा माछे भात खाइत मोंछक पमही भेल।

ओही गामक दोसर टोल मे एकटा छौड़ी रहै। नाँओ रहै– फुलिया। ओकरा अपन गाममे केओ नै रहै, तें अपन बहिन–बहिनोए लग आबि गेल रहए। ओकरहु चढंतिए छलै। लोक सभ झुट्ठे कहै जे फुलियाक देह इछाइन मँहकै छै। भेटक ढ़ेरही तोड़ैत काल जखनि ओ डाँड़ भरि पानिमे चुभकैत हमर लगीच आबए तँ बुझाए जे सौंसे चौरी भेट फुला गेलै–ए। हमहूँ ताकि हेरिक' दू चारि भेटक माला बनाए ओकरा पहिराबए लगियैक कि ओ लाल होइत गाल छिपबैत भागि जाए।'

राजा बिच्चहि मे टोकि देलनि– ''फुलियाक खिस्सा सुनाबए लगलह। ई ने कहह जे तों के थिकह?''

परेत हँसल– ''सत्ते मूरख छह। हओ फुलियाक बिना की हमरा चीन्हि सकबह। सुनह चुपचाप।''

परेत फेर कहए लागल– ''गाममे फुलिया आ हमर बात सभ केओ बूझि गेल रहए। ओकर बहिन सेहो सुनलक। गप्प चललै। फुलिया सँ

हमर बियाह भ' गेल। ओही साल कमला माइ सेहो किरपा कएलखिन। एही गाम देने बहए लगलीह। खूब धानो उपजै। माछ मखान भेट, सिंघार, करहर, सारूख ई सभ तँ अलेल रहै। केओ पुछनिहार नहि। ओही सँ लोकक गुजर चलै। जोलहा के एक पसेरी भेटक चाउर आ दू-चारि दिन माँछ दए अबियैक तँ एक जोड़ी सलगा बीनि दिअए। बोचा मियाँक सलगा नामी रहै परोपट्टामे। मजगुत तेहेन जे एक जोड़ीमे साल भरि निचेन। धारक ओइ पारमे अखनि जतए तोहर नरै कलमबाग छह, ओतहि सरपतक बोन रहै। ओकरे टाटी-फड़की बिनल जाइ। सभ अपन-अपन काज करए; दिन हँसी खुशी बितल जाइ।

राजा बड़ नीक लोक रहथि। नीक-लोक की बूझु जे सुधंग रहथि। लोक सभ कहै जे राजा कें आँखि छन्हिए नै, काने टा छनि। सोझाँमे कतबो लए लिएक तँ हँसी खुशी दए दैत रहथिन। मुदा परोच्छ मे नहियो लिऐक आ केओ झुट्ठे कहि सुनाबिन तँ बुझू जे ओकरा पर अट्ठाबज्जर खसि पड़ै। राजा रहथि कने जीहक पातर। माँगुर माछ जरे अँगूरक दारू खूब नीक लगनि। हम सभ पारी लगा क' बिछलहा मांगुर हवेली द' अबियौ। दारू टा बाहर सँ अबैक। ओकर बदलामे राजा एतए सँ मखानक लाबा पठावथि।

हमर बियाहक तीन बरखक बाद हमर बापो मरि गेलै। तेहेन ने सिंगी बिन्हलकै जे दू दिन जर धाह भेलै आ तकर परात मरि गेलै। सिंगीक जहरक मादे बुझले हएतह। कहाँदन एक बेर अजोध गहुमन अपन बिक्ख खरहीक झाँखुड़मे नेराए चराउर करै ले' गेल। ओम्हर सँ सिंगी आबि सभटा खाए गेलै। गहुमन जे घुरल तँ जहर नै भेटलै, तँ ओ आन्हर भाए गेल आ अन्हइ बनि गेल। सिंगीक जहर हमर बाप ले तँ सते गहुमनेक

जहर भए गेले। ओकरे फिरिया करम ले' बोचा मियाँक ओत' कप्पा द' समाद पठओलियै त' घरमे बीनल नै रहै। तखनि ओएह कहलकै जे राजाक हवेली पर एकटा पइकार अएलैए। रंग-बिरंग के कपड़ा-लत्ता बेचै छै। कपड़ा सभ बड़ पातर छै आ चिक्कन तेहन जेना पुरैनिक पात होइ'। हमरा सभ लग नकदी रुपैया कतए सँ पाबी। से माइक गराक हँसुली कटबन्हकी लगाए ओतहि सँ धोती मङओलियै। ओही बरख पच्छिम सँ आरो बहुत रास पइकार अएलै। भाँति-भाँति के जिनिस सभ लए कें। राजा कें अनदेसी चीज सँ लोभा क' पोटि लेअए आ एही नगर मे बसल जाए। पइकारी खूब चलै। लोक सभ सेहो अनदेसी जिनिसमे परकि गेल रहए। आब बोचा मियाँक कपड़ा केओ नै पुछै। सभ नकदी रुपैया हथियबै ले' अपसियाँत रहए लागल। राजाक संगे हुनकर देबान आ आरो हसबखाह सभ ओहने भ' गेल। आस्ते आस्ते ओ पइकार सभ जमैत गेल। बादमे तँ अपनै नियम कानून चलाबए लागल। तखनि राजाकें चाँकि भेलनि। ताबत तँ समय बीति गेल रहै। पइकार सभ गोलैसी क' नेने रहय। ओकर मेंट सँ राजा कें लड़ाइ भेलनि। मुदा राजा हारि क' जान बचबै ले' रानी के संग ल' कतौ भागि पड़एलाह। ओएह पछिमाहा गादी पर बैसल।

अपन घर मे हम तिनिए गोटे रही माए, हम आ फुलिया। हम मखान क तैयारी सुरू कएने रही। ओहि सँ नगदी रुपया आबए लागल रहए। ई राजा भेल तँ ओ मखान के दाम घटाए देलकै। अपन अपन पहिलुका नगरक पइकारक हाथे पानिक मोल बेचि दै आ अपने जे जिनिस बेचए से आगिक मोल। सभक हाल खराप होइत गेलै।

ओहि राजा के कथुक विचार नै छलै। हम सभ कमला माइक अरधना करी तँ चौल करए। कहै जे पहाड़ पर जे बरखा होइ छै आ बरफ गलै

छै सएह उपर सँ नीचाँ खँघरै छै ओकरा नदी कहल जाइ छै। ओही मे सँ एकटा के नाओ छियै कमला। ओकर पूजा क' की है तै? ई पूजा-पाठ सभ काहिल आ अमरुख के चलाओल छियै। आर की की ने कुचरए कमला माइक मादे। ओकर देखादेखी अपनहु नगरक धनिकहा सभ हँ मे हँ मिलाबए- खरखाही लूटए। हम सभ की करितहुँ। राजा रहए। केओ किछु नाकर नुकर बाजए तँ भकसी झोकाए मरबाए दै।

एम्हर लोकक ई हालति भ' गेलै जे पाँचो आङुर मुँहमे जाए पर अट्ठाबज्जर। साँझक साँझ उपास पड़ए लागल। राजाक दिस सँ चौरी चाँचर बन्दोबस्त हुअए लगलै। जकरा डाक बाजि क' पइकार सभ खरीदए आ ओहिमे बोनि पर हम सब खटी। अपन धंधा सभ चौपट्ट भाए गेल। हमर माए जे सेर क सेर भेटक चाउर हँसैंत बिलहि लै छल, तकरा मरबा बेरमे पाओ भरि खोंछि मे नै दए सकलियै।''

एतबा कहि ओ परेत थोड़ेक काल चुप्प भ' गेल, आ हिचुकि हिचुकि कानए लगाल। राजा सेहो सकदम्म भेल सभटा खिस्सा सूनि रहल छलाह। ओ किछु बाजए चाहलनि मुदा जीह जाँतल जेना भए गेल रहनि।

ओ परेत दम्म साधि फेर बाजल- ''मायक किरिया-करममे करज चढ़ि गेल। मास दिन पर जखनि मोहनमाला टुटल तखनि जान सँ उपर काज लगलहुँ। सक्क नै लागए। पेट बढ़ि गेल रहए। लोक सभ कहए जे तिल्ली बढ़ि गेल छह। पथ्थो पानि पर आफद तँ दवाइ-बीरो कतए सँ होइतै। हम खटोसल भ' गेलहुँ। सभटा भार फुलिया पर पड़ि गेलै। तावत एकटा टेल्ह सेहो जनमि गेल रहै। ओकरा कन्हेठने' ओ देवानक हवेली जाए आबए लगलै। काराक बासि सँठले हमरा ले' नेने आबए आ अपने

की खाए से नै बुझियै। बाद मे बुझलियै जे हवेलीक अँइठ खाए अपन पेट पोसै-ए। ई बात एक कान दू कान बिराबान भ' गेलै। बिरादरी मे फुलियाक बदनामी हुअए लगलै। हमरा सभ कहए- 'हवेली क काज छोड़ा दहक।' हम खेंघरा पर ओंघराइत सभटा लहूक घोट जकाँ पियैत रहलहुँ। बैसकीक दामस सेहो देल गेल। मुदा फुलिया के किछ टोकबाक साहस नै हुअए।

किछु दिन जखनि हवेली क सुअन्न खोराकी भेटल, तखनि कने सक्क भेल। एक दिन हमहूँ फुलियाक जरे हवेली पर गेलौ कोनो काज भङै ले। पानि मे पैसए बला काज करबाक साहस नै हुअए।

हवेली पर पहुँचले रही कि एकटा अजगुत खेल देखलहु। उतरबरिया कोठाक असोरा पर कुमर आ कुमरी खाइत रहथि। चेड़ी सभ भाँति भाँति क पकमान सभ चङेरिए चङेरी रखने रहैक। ओही ठाम नीचाँ मे यहाथहि करैत टोल परहक धीयापुता रहैक। कुमर आ कुमरी थार मे एक-एक टा पकमान लिअए। जे नीक लगै से अपने खाए नहि तँ धियापुताक हेंज दिस फेकि दै। दू चारि टा कुकूर से हो ताक लगओने रहै। फेकल पकमान के लुझै ले' जखनि छौड़ा सभ पछड़म-पछड़ा करए तँ ओहि दुनू क संग चेड़िया सभ सेहो हँसए। इएह खेल रहै। एही हेंजमे हम अपन फेकना के सेहो देखलियै। हमरा घिरना भ गेल।

हम अपन फेकना कें डेन धएने धूरि गेलहुँ। फुलिया के सेहो हवेली छोड़ाए देलियैक। एहि पर फुलिया कने नाकर नुकर कएलक। कहबो कएलक जे हवेली महलमे काज करै छियै। सालमे टू टा फाटलो पुरान तँ भेटि जाइए। चिक्कन केहन रहै छै, जेना भेटक फूल होइ। फुलियो के

बोचा मियाँ क सलगा सँ हवेली क फाटल पुरान बेसी रुचए लागल रहैक। मुदा हम कने दमसओलियै तँ मानि गेल।

हवेली तँ छोड़ाए देलियै मुदा ओही राति ठकउपासक हालति भ' गेल। फुलिया खूब हनहन पटपट कएलक आ फेर भोकड़ि पाड़ि क' कानए लागलि। हमहूँ कनैत कनैत सूति रहलहुँ। रातिमे सपन देखलहुँ जे माएक कोरा मे सूतल छी। माएक माथ पर दुनू कात छही माँछ चमकि रहल छैक। भेटक फूलक माला गरामे महमहा रहल छैंक। हम कानि रहल छी, माय चुचकारि रहल अछि। हमरा परतारैत माय कहै छथि जे तों उत्तर नेपाल दिस सुकठीक बनीज करह। खूब उछराए हेतुह।

माएक आढ़ति कतहु बेकार गेलै-ए। से सत्ते कमला माइ हमरा जे बाट घरओलनि से बड़ नीक लागल। आर चारि-पाँच गोटे के सङोर कएलहुँ। धार मे पानि घटए लागल रहैक। इचना आ पोठीक अबार चलैत रहैक। छानि छानि क' सुखाबए लगलहुँ। सुकठीक बनीज खूब जमल। नेपाल पहुँचिते गामे गाम छिड़िया जाइ। दुइए दिन मे एक बोड़ा छुहक्का उड़ि जाए। फेर सभ सङोर क' गाम धुरि आबी।

दुहए साल मे हमहूँ थितगर भ' गेलहु। बेस जकाँ रुपैया जर भ' गेल। तखनि सभ मीलि क' एकटा पोखरि तेसाला बन्दोबस्त लेलहुँ। भदवारि मे भखान तैयारी करी। मखान तँ अपनहि राज मे बिका जाए।

तेसर साल सुकठी लए के जखनि नेपाल पहुँचलहुँ तँ एक राति एकटा जंगलमे राति भ' गेल। हाथ हाथ नै सुझै। सभक मोन भेल जे एतहि राति बिताबी। लगमे एकटा घराड़ी सेहो देखलियै। पानियो के सुपास रहै। ओतहि भानसक इन्तजात बात भेलै। फुलिया ओहि घराड़ी सँ आगि माँगि

क तँ तेहन गप्प कहलक जे छगुनता लागि गेल। ओ कहलक जे अपन नगर क पुरना राजाजी एतहि रहै छथि। ओ हिनका सभक बोली बानी सँ बुझि गेल रहनि। बाद मे गर सँ रानी जी कें देखलकनि तँ चट चीन्हि गेलनि। हमहूँ सभ जाइ गेलहुँ सत्ते ओएह रहथि। सभटा ओहिना अखियास छलनि। हमरा सभ कें चीन्हि गेलाह। आँखि छुटलनि की घैल भ' अएलनि। भरि पाँज क' पकड़ि लेलनि। राति मे किन्नहु फूट मानस नै करए देलनि।

जखनि गाम घुरि अएलहु तँ राजा जी क गप्प टोल भरिमे कहलियौक। सभ हँ सेरी क तैयारी मे लागि गेल। सहथ तँ सभक घरमे रहबे करए बाँकी एक सय फड़सा आ एक सय भाला बनवाए घरे घर छिपाए देलियैक। राजा जी सँ गप्प कएलाक बात जे ठीके दुर्गा महरानी सभक मोन पर सवार भ' गेल रहथि। पछिमाहा राजा कानो कान नै भनक लगलै।

तावत भदवरि सेहो बीति गेल। मखान क गूड़ी फोड़ैके जोगर मे लागि गेलहु। राजाक एकटा पोखरि मे तेकड़ी पर मखान उपजओने रही। एकदिन सिपाही आबि क' कहि गेल जे राजाजी अपनै दलान पर सोझाँ मे फोड़ओथिन। हम सभटा गूड़ी ल' हवेली पर पहुँचलहु। ओतहि फोड़ए लगलौं। हमर नियम रहए जे मखान के ढ़ेरी सँ पाँचटा पहिलुक फोका कमला माइ के भोग लगा दियनि तकर बाद बाँट-बखरा होइ। थोड़ेक गूड़ी फोड़ै' बाँकिए छल कि तावत रंग मे भंग भ' गेलै।

बड़की रजकुमरी जकर वयस पनरह सोलह छल हेतै, ऐठैत जुठैत आएलि आ देखिते देखिते मखानक ढेरियेमे हाथ लगाए खाए लागलि।

फुलिया एक-दू बेर दबले मुहें रोकबो कएलकै मुदा ओ माननिहारि नै। तखनि हमहूँ कने जोर सँ कहलियै जे पहिलुक फोंका कमला माइ कें चढ़तनि। अहाँ हाथ लगा देलियै त' सौसे ढ़ेरी अँइठ भ' गेलै। अँइठक नाम सुनिते ओ भभा क' हँसए लागलि आ कहलक जे हम कि गाए महीस जकाँ ढेरी मे मुँह लगाक' खेलियौ-ए, तखनि अँइठ केना भेलै?

''निखनात नै ने रहलै''- कहलके फुलिया।

ई गप्प सप होइए रहै कि ओ चंडलबा राजा हनहनाहत आएल।

- की बकझक करै छें?

-' गोढ़िबे, बड़ अँइठ कुँइठ बुझ' लगलहिन-ए। भाँड़मे जाथु तोहर कमला माइ। सरबे पंडिताइ झारै छें। चुपचाप काज कर।'- राजा बमकए लागल।

हमरहु एँड़ी सँ टिकासन धरि लेसि देलक। सभ सँ बेसी खराब लागल कमला माइके गरिआएब। भदेस सँ आबिक' केओ हमरा सभक अदौके बातके नकारि देत, ओकरापर हँसत, ते से केना बरदास्त हैत। एक तँ ई राजा पच्छिम दिससँ जिनिस सभ आनि आनि क' एतुका लोक के कोंढ़ि बना देलक। जखनि मिलहा कपड़ा अनलक तकर बाद बोचा मियाँक दुर्गति हमरा देखल छले। ओइ सभ चालि सँ दूहि लेलक ई अइ लोक के। तइ पर सँ आब हमरा सभक' कमला माइ के सेहो गरिआओत। हमसभ जँ कमला माइक अरधना करिते छी तँ एकरा कोन दालि गलै छै। ई सभटा बात हमरा माथेमे घुमए लागल। हमहूँ तनिक' कहलियै- ''मुँह सम्हारिक' बाजह। कमला माइक मादे किछ अंट-संट बजलह तँ जे ने से भ' जेतह।''

हमर ई गप्प सुनिते ओ चंडलबा राजा जेना बताह भ' गेल। हाक देलकै तँ चारि पाँच टा सिपाही' दौड़ल। ओहिमे सभ अपने जाति भाय रहए। मुदा राजाके एँड़ी चटनिहार सभ। ओ' सभ डंटा ल' क' हमरा चारूदिस सँ लठियाबए लागल। से देखिक' हमरा आर लहरि चढ़ि गेल। की कमला माइ ओकरा सभक माय नहि छलखिन।

राजाक आढ़ति पर हमरा दुनू गोटे कें रस्सामे बान्हि घिसियौने एही सिमर गाछतर अनलक। हमरा गाछक एही डारिमे उलटा लटकाए देलक आ हमरा सोझाँमे ओ पाँचो छबो टा सिपाही फुलिया के नोचि पटकि देलकै।''

एतबा कहि ओ परेत बपहारि काटए लागल। ओकरा कस्साक मारि मोन पड़ि आएल रहै। पह फाटि रहल छलै'।

राजा उठिक क' घैल सँ पानि ल' कुरुर कएलनि आ खोपड़िमे बैसि रहलाह।

परेत फेर बाजल- ''हे राजा आब राति बीति रहलै-ए। आब हमरा चल जएबाक बेर भाए गेल। अहाँक दोसर सबालक जबाब हम काल्हि देब''।

राजा कें भोरहरबाक बसातक सिहकी अलसाए देने छलनि। कने काल ले' आँखि मुनाए गेलनि। सुरुजक इजोत पड़िते आँखि खुजलनि तँ ने परेत छल, ने खोपड़ि, न घैल। सभ किछु अलोपित भ' गेल रहए। ओ सिमरक गाछक जड़िमे अपनाकें दूबि पर बैसल पओलनि। कात मे सुखाएल धार साँपक केचुआ जकाँ बूझि पड़ि रहल छल।

दू

दोसर दिन राजाक मजलिस लागल। दरबारी सभ जुटल रहथि। चर्चा आरम्भ भेल। सभक मोनमे एकेटा चिन्ता; सभक ठोरपर एके गप्प, कमला माइक कोन अनठ भेलनि जे एना निसोख भए गेलीह। पोखरिमे सोह किएक नहि फुटैत अछि'। पानि बेतरेक नगरक हालति खराप भए गेल रहैक। एक-टू टा जे रजकूप टेक धएने रहए ओहू सभमे पानि दुइ तीन हाथ खसि पड़ल रहैक। एम्हर बरखाक कोनो टा आस नहि। जखनि हथियो गरजिक' चल गेल मेघ नहि बरसल तखनि स्वाती सँ की आस। राजा घाड़ झुकओने सभटा सुनैत चुपचाप बैसल छलाह।

एही बीच दरबान इतलाए बाजल फाटक पर चारि गोटे ठाढ़ छथि। सरकार सँ भेटँ करए चाहैत छथि।' राजा कहल- ''हाजिर करह।''

थोड़ेक कालमे ओ चारू गोटे आबि राजाकें सलामी दए कातमे ठाढ़ भए गेलाह। एक गोटे डाँड़सँ एकटा चीठी निकालि राजाकेँ देलनि। राजा चीठी पढ़ि जखनि राखि देलनि तखनि ओ बजलाह-

''सरकार! अपनेक नगरमे हमसभ अपनेक आदेशसँ हवा-मिठाइक बनीज करैत छी आ ओकर कर ठीक समयपर खजानामे जमा करैत छी। एहि नगरक धियापुताई हवा मिठाइ किनैत अछि। ई हवा-मिठाइ बनाए कोन धरानिए अपन नगर सँ अनैत छी से सरकार कें की कहब। हमरा नगरक रानीजी सरकारक बहिन थिकीह। एही बेर भरदुतियामे जएबामे कोन कष्ट भेल रहए से जनैत होएबैक। चारि टा धार तँ नाह सँ टपए पड़ै

छै। ऐते तरदुत उठाए हम सभ एतए बनीज करैत छी जे दुइ एक सेर धान जर करी आ एहि नगरक धियापुता लिलोह नै हुअए। मुदा........।

''मुदा की?'' -राजा पुछल।

-''हमसभ सरकारक जुत्ता तर छी। किछु ऊँच नीच बजना जाए तँ जान बकसि दी।'' दाँत निपोड़ैत ओ पइकार बजलाह।

-''निडर भए कहू।'' राजा गंभीर होइत बजलाह।

-''सरकारक खास आदमी हमरा सभक बनीजके भुस्साथरि बैसाबए चाहैत अछि। हमरा सभक पेटपर लात मारए चाहैत अछि। तैयो.........।''

-''तैयो की? खुलासा बाजू''। राजा तनिक' बैसलाह।

-''तैयो जँ केवल हमरा सभक बनीजके भुस्साथरि बैसाए हुनकर हिया जुड़ा जानि सँ हमसभ बिना किछु गलगुल कएने दोसर नगरक बाट धए लेब। मुदा ओकर छओ कतहु पाओ कतहु छैक। ओ चाहैत अछि जे एही बहाना सँ सरकारक ठोरक लाली छीनि ली। हमर नगर सँ सरकारक हबेलीमे जे किछु वस्तुजात अबैत अछि, ओहि सभ लेल सरकार कें लिलोह कए दी। बाहरी दिन दुनियाँसँ सरकारक लागि तोड़ि दी। ताहू सँ बढ़िक' एकटा भाइ बहिनक सिनेहक डोरीके झटकि तोड़ि दी''।

राजा चौंकलाह। थोड़बे काल पहिने अपन बहिनक चीठीमे पढ़ने रहथि जे सरकार बड़ बिगड़ल छथि। तखनि तँ अर्थ नहि लगलनि मुदा आब बुझि गेलाह। राजाकें चुप देखि ओ पइकार फेर बजलाह-

''हमर नगरक राजाजी बड़ बिगड़ल छयि। रानीजीसँ चिठी लिखाए हमरा सरकारक सोझाँ हाजिर भए नौ छौ करबाक आढ़ति देलनि अछि। आगाँ सरकारक आढ़ति माथ पर''।

–''के अछि ओ हरामी, जे एहन काज क' रहल अछि''।

राजा बमकलाह। लोहा तपि चुकल छल। हथौड़ाक चोट दए तरुआरि बनएबाक ताक भए गेल रहै।

–''सरकारक खास आदमी अछि। केसो साहु। हवेलीक खास हलुआइ''।

–''केसो साहु? ओ तँ बड़ नीक लोक अछि।'' –राजा कें आश्चर्य भेलनि।

–''सरकारक आबेस पाबि ओ अपनाकें नल महराज आ धन्वन्तरि वैदराजहु सँ पैघ बुझए लागल आछि।''

–''ओ की कएलक से खोलासा बाजह।'' राजा कने उत्तेजित भए गेलाह।

तुरत केसो साहु बजाओल गेलाह। तखनि ओ पइकार बजलाह– ''हमर सभक हवामिठाइक ई देखसीक' बेचैत छथि। हमसभ एक पसेरी धानमे जतेक बेचैत छी, ओतेक ई एके अढ़ैयामे बेचि दैत छथि। हमसभ मुहें तकैत रहि जाइत छी।''

केसो साहु सँ पूछल गेल तँ ओ बाजल–

''ई ठीके कहैत छथि। एक दिन हमर नाति एक झोड़ी हवामिठाइ

किनलक तँ दुइ चारि टा हमहूँ चिखलहुँ। सुआदलहुँ तँ बुझि गेलियै जे ई मखानक लाबाके बनल छै। ओकरा चीनीक सिरकामे पागिक' रंग मिलाए झोड़ीमे सीबिक' बेचैत छथि। तखनि हमरा ओ बड़ महग बुझाएल। एक दिन अपन नाति ले' अपनहि सँ बनओलहुँ। तकर बाद आढ़ति पर सँ आढ़ति आबए लागल। हमहूँ घानीपर सँ धानी बनबैत गेलहु। इएह बात छियै सरकार''।

केसो साहु चुप भए गेलाह। ओ पइकार एक गोटे दिस संकेत करैत उतराचौरी आगाँ बढ़ाओलनि- ''सरकार, ई छथि हमरा नगर ओ हलुआइ जे पहिले पहिल ई हवामिठाइ बनओलनि। आ संगहि दोसर छथि हमरा सभक वैद्यजी; जे ओहि मिठाइमे एहन दवाइ फेंटैत छथि, जकरा खएला सँ तागति बढ़ैत छैक आ बहुत तरहक बिमारी सँ सुरक्षा होइत छैक। हमरा सभक हवामिठाइक बिक्री घटला सँ एहि नगरक धियापुता ओहि दवाइ सँ वंचित रहि जाइत अछि आ हिनक बनाओल लाबा खाए ठकल जाइत अछि। तें एहन ठक कें सजाए देल जाए। आगाँ सरकारक आढ़ति माथपर'।

केसो साहु राजाक खास हलुआइ रहथि। हुनकहु अपन लूरि पर गुमान रहनि। तें ओहो हारि मानि चुप बैसनिहार नहि।

-'सरकार, हमरे नगरमे उपजल मखान' कें माटिक मोल कीनिक' ओकरा ई लोकनि आगिक मोल बेचैन छथि। जतेत हवामिठाइ ई एक पसेरी धानमे बेचैत छथि, ओतेक मखान तँ एतए लोक मङनीमे बिलहि दैत अछि। चीनी बड़ थोड़ लगै छै। ओकरा सोन्हगर बनबै ले' हम कचूर दैत छियैक, जे सभ ठाम बाड़ी-झाड़ीमे अलेल उपजे-ए। एहन मिठाइक

बदला मे मेहनति सँ उपजाओल एक पसेरी धान आन नगर चल जाइत अछि से हमरा नहि सोहाएल, तें हमहूँ बनबए लगलहुँ। टटका-टटकी बनबै छी। टटका के परतर हिनकर हवामिठाइ कत' सँ करतनि। नै जानि कते दिनुका बनलाहा रहैत छनि।

एतबहिमे हवेलीक घंटा बाजल। सभक भोजनक समय भए गेल रहनि। तें राजा कने अगुताइत पइकारसँ पुछल अहाँकें आर जे किछु कहबाक हो से कहि दिय'। हम विचार करब आ जा धरि कोनो नौ छौ नहि भए जाइत अछि ता धरि हवामिठाइक बनीज नहि हुअए। केसो साहु सेहो ओ मधुर नहि बनाबथि'।

ओ पइकार बजलाह- ''हमर हवामिठाइमे सहरगंजा रंग नहि मिलाओल जाइत अछि। ओ रंग हम बनारससँ मङबैत छी। नेपालक जंगल छानिक' आनल जड़ी बूटीसँ ओकरा सोन्हगर बनबै छी। जाहि झोड़ीमे बन्न कए ओ बेचल जाइत अछि, से कलकत्तासँ अबैत अछि। ओहिमे बन्न कएलाक बाद बासि-तेबासिमे कोनो अन्तर नहि पड़ैत छैक। मासो दिनका बाद ओहने रहैत अछि। एहि सभमे खर्च पड़ैत छैक, तरदुत होइत छैक। तखनि एक सेर धानमे एक झोड़ी बिकाइत अछि। सरकारकें बेसी कहबाक काज नहि। बुधियारकें कनखिए काफी। तखनि तँ सरकारक आढ़ति माथपर। ''

ओ पइकार चुप भए गेलाह। राजाक मजलिस टुटल। राजा चुप्पे अन्नर दिस बढ़ि गेलाह, जतए चेड़ी हाथ-पयर धोबा ले' सोबरना नेने ठाढ़ि छलि।

तीन

दिन बीतल; साँझ पड़ल; सूर्य अस्त भेलाह; राति भेल। राजाक छातीक धुकधुकी बढ़ैत गेलनि। पछिला रातुक एक एकटा गप्प मोन पड़ैत छलनि तँ रोइयाँ ठाढ़ भए जाइत रहनि। सिमर गाछपर उनटा लटकल ओ परेत आ ओकर हँसब बाजब आ कानब, सभटा आँखिक सोझाँ नाचि उठनि। बुझाइन जे ओ कोनो दोसर लोकमे आबि गेल होथि। एसकर होइतहि राजा एहि लोकक सभटा बात बिसरि जायि।

अनमनाएले जकाँ राजा रातुक भोजन कए जखनि अपन कोठरी अएलाह तखनि दस बाजि रहल छल। सिमर गाछ तर जएबाक बेर लगिचाए गेल रहनि, तेँ छातीक धुकधुकी आर बढ़ि गेलनि। एक मोन मेलनि जे आइ नहि जाइ, मुदा फेर दोसर मोन तुरत चेतौनी देलकनि जे नहि गेला सँ जँ कहूँ ओ परेत खिसिआए गेल तँ किछु क' सकैए। सँगहि इहो मोन मानि गेल रहनि जे गोसाउनि जकरा मादे कहने रहथिन से ओएह परेत थिक। तखनि जँ परेतक समटा गप्प नै सूनि लेताह तँ कमला माइक रुसबाक कारण आ बौंसबाक उपाय केना बुझताह। तें जाएब तँ आवश्यक छलनि।

समय बितल जा रहल छल। राजा पलंग पर पड़ल टकटकी लगओने घड़ी दिस देखि रहल छलाह। राजा कें घड़ीक प्रतीक्षा जतेक नै छलनि, ओतेक छलनि रानीजीक सुति रहबाक प्रतीक्षा। तें अपन छातीपर राखल हुनक बामा हाथक कँगनाके कखनहु खनखनाए बुझबाक प्रयास कए लेथि जे ओ सूति रहलीह कि जगले छथि।

जखनि बेस काल धरि राजा सूइल सँ पाइत धरि आ पाइत सँ सबरब धरि सोहरओलनि आ रानी नहि सगबगएलीह, तखनि गँओसँ हुनक हाथ अपन छातीपर सँ हँटाए कात कएलनि। रानीजीकें नीक जकाँ देखलनि तँ बुझएलनि जे ओ सूतलि छथि। राजा निश्चिन्त भए पलंग सँ उठलाह।

कामदार कपड़ा सभ खोलि सहरगंजा मिरजइ आ धोती पहिरलनि। खुरिया खोंसलनि आ कोठलीक केबाड़ खोलए बढ़लाह कि रानीजी भभा क' हँसैत पलंग पर बैसि गेलीह। राजा थकमकाए गेलाह।

रानीजी झटकि क' हिनका आगाँ आबि ठाढ़ भए गेलीह। हुनक खूजल केस भुइयाँ लोटाए लागल, काड़ा खनकि उठल, डँडकस मचकि गेलनि, केचुआ मसकि गेलनि, घोघट ससरि गेलनि, पसाहिन चमकि उठल, लट गमकि उठल, दुनू ठोर थर थरएलनि आ आँखिक दुनू कोर सँ दू बुन्न नोर गाल पर पिछड़ि गेल।

रानीजी बजलीह– ''राजाजी! राजाजी! एते राति क' के मोन पड़लीह कजराबाली कि गजराबाली! मुजराबाली कि बजड़ाबाली! राजाजी! कतए विदा भेलहु चुप्पेचाप। राजाजी! रूपाके दियामे पाटक टेमी जरौलौं, सोनाके कजरौटीमे कजरा जे पाड़लों, से कजरा नोर सँ धोखरल जाइए यौ राजाजी! कोस भरिक फुलबारी सँ सोनजड़ी अँचरामे, फूल जे बिछलियै, भौंरा कि मधुमाछियोक सूँघल फूल नै छुबलियै, खुरचनक टकुरीसँ बाड़ीक बाँङके सूतो कटलियै, ओहि सूतक तानीमे गजरा गँथलियै। अहाँक हाथक छुतियो ने भेलै; सिरमामे डालापर पुरैनिक पतौड़ामे रखले मौलाए गेलै यौ राजाजी! ओहो कजरा, ओहो गजरा रूचल नै अहाँ केँ यौ राजाजी! तखनि आब नयनाके नोरसँ हियाके दिया जरएबै, सुन्न

अकासक कजरौटीमे पाड़ल कजरा लगेबै, इन्द्रक फुलवारीसँ लोढ़ल फूलक गजरा गँथबै, चचरीक बजड़ा चढ़ि संसारक समुद्र नाँघि ओहि पार जेबै, इन्द्रक फुलबारीक एक कोनमे अहाँक नामक आसन लगेबै, आसनक आगाँमे मुजरा लगेबै। ओतए तँ अहाँ अएबै ने यौ राजाजी!''

रानीक आँखि सँ दहोबहो नोर झहरए लागल। राजा कें अक-बक किछु नहि सुझाइन। असल बात कहि रानीजी कें डेरबए नै चाहैत रहथि। तखनि किछु कहि परतारि क' चलि दितथि से कठिन छलनि। ओ दूधक धोएल तँ छलाह नहि जे हुनक बातपर रानीजी कें विश्वास भए जैतनि। एहिना कतेक राति ठकि फुसियाक' गजराबाली कि कजराबालीक दुआरि नाँघि चुकल छलाइ। तें ओ अस्त्र सभ आब रानीजी ले' व्यर्थ भ' गेल छल।

राजा बजलाह- ''हे धनि! जुनि कानू । गोसाउनिक सीरपर बरैत दीप अहाँ छी। नगरक कोन-कोनमे जरैत अंडी तेलक उकारी सँ सौतिनिया डाह किए करै छी? अश्विनी सँ रेवती धरि तारका सभक भोग कएनिहार चन्द्रमा की अपन चन्द्रिकाकेँ छोड़ि दैत छथि। हे धनि, अग्निक ज्वाला, जलक शीतलता, आकाशक शून्यता जकाँ अहाँ हमर छी, जकरा बिना कजराबाली कि गजराबालीक कोनो मोल नै। मुदा एखनि तँ ओकर चर्चे व्यर्थ। हम तँ आइ दोसर काजसँ जा रहल छी। एकटा आवश्यक राजकाज भए गेल अछि।

- ''एतेक राति क'?'' रानीजीकें जेना विश्वास नै भए रहल छलनि।

- ''हँ धनि, आफदक बेरमे की राति आ की दिन?''

– तखनि कपड़ा छाड़बाक कोन काज?'' रानी जिरह करए लगलखिन।

राजाक चोरि पकड़ा गेल। एकर कोनो जबाब हुनका लग नहि बँचल। अन्तमे राजा थाकि हारि सभटा खेरहा सुनाए देल।

रानी बजलीह– ''हमरहु सँ छल कएलहुँ राजाजी! मुदा आब पछिला चूकक गप्पे कोन? आइ हमहूँ जाएब अहाँक संग।''

''अहाँ?'' –राजा कुदि उठलाह।

– ''हँ राजाजी! भूत–परेतक मुँहमे एसकर केना जाए देब। अहाँक रक्षा लेल हमहुँ जायब।''

– ''हमर रक्षा अहाँ करब?'' राजाकेँ रानीक ई गप्प ओहिना अनसोहाँत लागि रहल छल जेना ओ पुरैनिक पातक ढाल ल' लड़ाइमे जएबाक गप्प कहि रहल होथि।

– ''हँ राजाजी! बियाहक साल सुखराती निशाभाग रातिमे नानीसँ जे सिखलहुँ से आइ नै तँ कहिया काज देत?''

राजाकें सभटा रहस्यमय बुझा पड़ि रहल छलनि। रानीक एतेक आत्मविश्वास! सुखरातीक निशाभाग रातिमे सिखबाक बात सुनि राजा कें ठकमूड़ी लागि गेल।

– ''एना की तकै छी? हमर नानी की सभ जनैत छलीह आ हमरा कते सिखओलनि से आइए परताए लिय'। अपन टोना–टापर सँ हम एहन घेराबा बनाए लेब जकर भीतर परेतक बापो किछु नहि कए सकत।'' रानीक मुट्ठी तनि गेल।

– ''मुदा जाएब केना? पहरूदार बुझि जाएत तँ सौसे घोल भए जाएत, तखनि एक-एक क' सभ संग लागि जाएत।''

– ''केओ नहि बुझत। थम्हू कने। हम सभटा जोगाड़ धराए लैत छी।''

रानीजी केबाड़ खोलि फुलबाड़ी पैसलीह; ओतए एकटा पैघ सन मएनाक पात तोड़लनि। भनसाघर गेलीह; पिठार पिसलनि आ आबि गेली झट द' राजाक लग; मएनाक पात पर अरिपन देलनि। अपनहु ढाढ़ भ' गेलीह आ राजाजीकें सेहो सटिक' ठाढ़ होएबा ले' बजओलनि। गेंठ जोड़लनि; किछु मन्त्र पढ़लनि। ओ मएनाक पात धरती सँ उठल आ खुजल केबाड़ देने आङन आएल आ अकासमे उड़ए लागल। रानीजी पुछलनि- ''डर तँ ने होइ-ए?''

– 'नहि, आब सभ डर बिलाए गेल।'' राजाजी सभ किछु समर्पण कए देलनि।

ओ मएनाक पात दुनूकें थम्हने अकासमे उड़ल जा रहल छल। रानीजी बेर बेर पुछथिन्ह- ''ओ सिमरक गाछ केम्हर छैक?''

राजाकें दिसाँस लागि गेल रहनि। एक तँ रातिक समय, निचला घर-आङन, गाछ-बिरिछ किछु सुझि नहि रहल छलनि। ताहिपर सँ आकाशमार्ग देने यात्रा। से जएबाक छलनि पूब दिस, देखाए देलखिन पच्छिम दिसक बाट। रानीजी ओम्हरे इसारा कएलनि; ओ मएनाक पात ओम्हर उड़ए लागल।

जखनि किछु दूर गेलाह तँ एकटा खूब चतरल गाछक अछाह बुझएलनि। ओकरहि सिमरक गाछ बूझि दुनू गोटे ओतहि धरती पर अएलाह। मुदा ओ

सिमर नहि पाकड़िक अजोध गाछ छल। राजा चिंतित भए गेलाह। अन्हार राति चारुकात भकोभन्न। कतए आबि गेल छी सेहो ज्ञान नहि रहलनि। बिना प्रकाशक संचारसे कोनो उपाय करबामे अपनाकेँ असमर्थ बुझलनि। आकाश स्वच्छ छल तेँ राजाकेँ अष्टमीक चन्द्रोदयक आस जगलनि। चन्द्रोदयमे किछु बिलम्ब रहैक तेँ ओकरे प्रतीक्षा करैत दूनू गोटे असोथकित भए ओही पाकड़िक गाछ तर में बैसि गेलाह।

ओहि गाछक एकटा धोधड़िमे सोनचिड़ै दूनू परानी रहैल छल। राजा आ रानी जखनि ओतए बैसलाह तँ चिड़ै बाजल– ''हे धनि, आइ देखू जे केहेन हमरा सभक भाग जोड़गर अछि जे एक दिस हमरा सभक सन्तान हुअ' बला अछि आ दोसर दिस एहन अभ्यागत आबि गेल छथि। हमरा सभके चाही जे हुनकर स्वागत सत्कार करी''।

राजा नीचामे बैसल सोनचिड़ै दुनू परानीक गप्प सुनए लगलाह। चिड़िन बाजलि– ''हँ ठीके कहलहुँ। एक तै बच्चा हुअए की बूढ़, जबान हुअए कि बेसाहु, घरपर पहुँचल अभ्यागत देवताक रूप होइत छथि, ताहूमे ई तँ एहि नगरक राजा आ रानी छथि, सेहो बाट भोतिया क' एतए आबि गेल छथि तेँ जते धरि भ' सकए से हुनकर सत्कार करियौन। दु:खक बात ई जे हमरा आइ बिछाओनहु पर सँ उठबाक सक्क नै लगै–ए।तें हुनका दुनू सँ आशीर्वादो लै ले' हम नै निकलि सकब।''

– '' से तँ जे से...। सभसँ तँ चिन्ता अछि जे की ल' क' सत्कार करबनि? आइ जे हम जर क' अनने छी से एक तरहें अँइठे अछि।'' चिड़ै बाजल।

– ''झोड़ी तँ ओहिना मुनले छैक तखनि अँइठ केना भेलै? लोल सँ पकड़िके जे अनने छी तँ अँइठ कहै छियै की?'' चिड़िन पुछलकै।

– ''नै से बात नै छै। ई मनुक्खक अँइठ थिक।''

– ''कत' सँ अनलहुँ?''

– 'हे धनि, आइ हम अहलभोरे अहाँ ले' कोनो बढ़ियाँ सनेसक खोजमे निकलहुँ तँ इच्छा भेल जे इन्द्रासनक फुलबाड़ी जाए ओतहि सँ कोनो सोन्हगर फल नेने आबी। उड़ैत उड़ैत ओतए गेलौं तँ ओकर रखबार हमरा एसकरे देखि भीतर पैसबा सँ रोकि देलक। ओ कहलक जे एहि फुलबाड़ीमे बिना अपन प्रियाके केओ नै जाए सकैए। की देवता, की गन्धर्व आ की पशु-पक्षी, एसकर मुँह बिधुअबैले' एतए टपि नै सकै-ए। तखनि हम अपन सन मुँह नेने धरतीपर घुरि अएलहुँ आ एतहि एहि नगरसँ ओहि नगर बौआए लगलहुँ। जाइत-जाइत एक नगर पहुँचलहुँ। ओ नगर एतए सँ पच्छिम अछि। ओतए राजाक अटारीक पछुआड़मे ई हवामिठाइक झोड़ी सभ मारते रास फेकल देखलियै। पहिने तँ हमरा सक भेल जे कहूँ कोनो जाल-फाँस तँ ने बिछाओल छैक। थोड़ेक काल एहि गाछ सँ ओहि गाछ चकभाउर दैत रहलहुँ। देखलियै जे कौओ सभ निघोख भए एक एकटा झोड़ी उठाए रहल अछि तखिनि हमरहु कने हिम्मत बढ़ल। मुदा फेर सोचलहुँ जे पहिने एहि हवा मिठाइक सम्बन्ध मे सभटा भजिया ली। सन्देह भेल जे एत' ई फेकल किए गेलै? कहूँ जहर माहुर तँ ने मिझहर भए गेलै? संयोग भेल जे एकटा कौआ ओहि हवामिठाइक झोड़ी लूझि क' ओही गाछ पर बैसल जाहि पर हम रही। हम ओकरा सँ पुछलियै तँ ओ कहए लागल- ''तों दूर देससँ आएल बुझाइत छह तेँ किछु नै बुझल

छह। आइ एक माससँ सौंसे नगरमे घरे-घरे ताकिक' ई फेकल जाए रहलै-ए।

-''किए फेकल जाए रहलै-ए?'' -हम पुछलियै।

-''किछु नै बुझल छह? तखनि सुनह चुपचाप। करीब एक मास भेल हेतै। रजकुमरीके मोन खराप भए गेलैक। एकटा वैद अएलै। ओकर दवाइ गुन नै कएलकै। दोसर अएलै। तेसर अएलै। एहिना वैद सभक धरड़ोहि लागि गेलै मुदा रजकुमरी निकें नै भेलै। तखनि बहुत दूरके नगरसँ एकटा वैद अएलै। ओ रजकुमरी के मादे च-तु के सभटा पुछारि कएलकै। की की खाइ ए; कतए कतए घुमै-ए; कोन-कोन कपड़ा पहिरै-ए; सभटा जखनि भँजिया लेलकै, तखनि जे दवाइ देलकै तेँ दुइए दिनमे रजकुमरी टनमना गेलै। ओएह वैद कहलकै जे ई झोड़ीमे बन्न हवामिठाइ खएला सँ भाँतिके गरू हेतै। ओएह राजाके कहलकै जे सभके मना कए दियौ जे ओ हवामिठाइ नै खाए। राजा ओइ वैदक करामात देखि नेने रहए तेँ विश्वास भ' गेलै। तहिया सँ अइ नगरक लोक केओ ई हवामिठाइ नै खाइए।

- ''तखनि तँ हलुआइ सभक लोटिया बुड़ि गेलै!'' हम कहलियै।

- ''नै बुड़लै। राजा एकटा तरकीब निकालि लेलकै। राजा कहलकै जे ओ हलुआइ सभ ई सभटा हवामिठाइ आन आन नगरमे जाए बेचत। एहि राजाके सासुर एतए सँ दस कोस पूबमे छै। ओतए तँ खूब पैकारी जमि गेलैए।''

गाछक तरमे बैसल राजा चौकलाह। सोनचिड़ै हिनके नगरक मादे कहि रहल छल। हवामिठाइक पैकारी ठीके हिनकर नगरमे खूब जमि गेल

छलनि। राजा आर कान पाथि कए ओहि सोन चिड़ैक गप्प सुनए लगलाह। सोनचिड़ै कहि रहल छल– ''हे धनि, सएह कहैत छी जे जखनि केओ ओहि हवामिठाइक भोग कएनाइ छोड़ि देलक, तखनि तँ ओकरामे आ अँइठमे कोन अन्तर? निछरल वस्तुके अँइठ नै कहबै तँ ककरा कहबै। तँ कहै छी जे एहन अँइठ वस्तु लए राजा–रानी सनक अभ्यागतक सत्कार केना करब।

– ''तखनि की करी?'' चिड़िन पुछलकै।

– ''सएह तँ हम अहाँसँ पूछै छी?''

– एहि पर चिड़िन बाजलि जे राजा आ रानी अन्हारमे भोतिया कए एतए आबि गेल छथि, से अहाँ जाइ हुनका रस्ता देखा दियनु। बड़ प्रसन्न हेताह। आ ई एकटा ठहुरी सेहो दए देबनि। ई हम इन्द्रासनक फुलबाड़ी सँ अनने रही। एकर चमत्कार छै जे मुइल लोक, कि हड्डियोमे जँ ई ठहुरी भिड़ा देल जाएत तँ ओ जीबि उठत।''

ई सुनैत देरी राजा खुशी सँ नाचि उठलाह। अखनहु चन्द्रमाके उगैमे किछु देरिए छल, मुदा अन्हार कने कम भए गेल रहै। एही समयमे ओ चिड़ै गाछपर सँ उतरल। आबि कए राजारानी के ँ प्रणाम कएलक आ इन्द्रासनक फुलबाड़ी सँ आनल एक बीतक एकटा ठहुरी राजाक हाथमे देलकिन। राजा ओ लए माथ चढाए मिरजइमे खोंसलनि। तकर बाद ओ चिड़ै कहलकनि–

– ''हे राजा! हे राजा! अहाँ सभकेँ कतए जेबाक अछि? कहू तँ बाट देखाए दी।''

राजा ओहि सिमरक गाछक नाम लेलनि तँ ओ चिड़ै आगाँ-आगाँ उड़ल। रानी सेहो मएनाक पात हँकलनि आ सिमरक गाछतर पहुँचि गेलाह।

तावत धरि अष्टमीक चंद्रमा उगि गेलाह। साँसे बाध इजोरिया पसरि गेल। धरतीक फाटल दरारि सेहो देखा पड़ए लागल।

सोनचिड़ै कँ घुरि जेबा ले' कहि रानीक सँगे राजा खोपड़ीमे जा बैसलाह। पछिया रातिसे खोपड़ियो बेसी नाम-चाकर रहैक। एतबे नहि ओहि दिन पुआरक सेजौटक बदलामे गादी आ मसनद सेहो लागल रहैक। रानी कहलथिन- ''राजाजी! ई कोनो छोट-छिन परेत नै छी। एकर आत्मा बहुत दिन सँ बौआए रहल छै। एकर उद्धार अहाँकँ करबाक हएत।''

राजा पुछल- ''केना उद्धार होएतैक से कहू।''

रानी उत्तर देलनि- ''मरबाक काल एकर जे ममोला छल होएतैक से जँ पूरा भए जाइ तँ एकर उद्धार भए जाएत।

दुनू गोटे परेतके अएबाक समयक प्रतीक्षा करए लगलाह। परेत आएल। फेर ओ ओहिना उलटा लटकल छल। ओतहि सँ दुनू गोटेके प्रणाम कएलक आ बाजल- ''हँ, तँ सुनह हओ राजा। काल्हि राति हमरा हँसी लागि गेल रहए। तकर कारण सुनह। तोहर परदादा अपना जिबैत राज हासिल नै कए सकलखुन ओ अपने नेपालेमे जान गमओलनि। हुनकर बेटा बहुत दिन धरि लड़ाइ करैत रहलाह तखनि जीत भेलनि। ओ पछिमाहा चण्डलबा राजा मारल गेल। ओकर लोक सभ अपन नगर भागल। नवका राजा जखनि गद्दी पर बैसलाह तँ एतुका अपन रोजगारके

खूब सह देलनि। गरीब गुरबा धन्य-धन्य भए गेल। एहन रहथि ओ राजा। मुदा हुनके सन्तान भए तों अप्पन बोली-बानी, भेष-भूषा, चालि-चलनि सभटा बिसरि गेलह। हओ, देखसी पर कतेक दिन चलएबह ई राजपाट। हओ पछिमाहा दारू आ दछिनाहा बुलकीबालीक संग रभसैत काल कहाँ कोनो बाधक रखबार मोन पड़ैत छह। काल्हि केना मोन पड़ि गेल रहह ई कमलाक कछेरक ई सिमरक गाछ आ ई पाँच पुस्त'क समयसँ उनटा लटकल एकटा गोंढ़ि! तें हमरा हँसी लागि गेल रहए।''

रानीक आँखिसँ दहोबहो नोर बहए लागल। राजा सेहो अपना के सम्हारि नै सकलाह; हिचुकए लगलाह- ''हे कमला माइक सपूत, आइ अहाँ हमर आँखि खोलि देलहुँ। हम एतए बन्धनक तरमे सप्पत खाइ छी जे अप्पन बोली-बानी; चालि-चलनि, भेष-भूषा नै छोड़ब; अनकर देखसीपर नै उड़ब। हम सप्पत खाइ छी। मुदा अखनि हमर राजक प्रजाके बचाउ। प्रजा पानि-पानि क' मरि रहल अछि। अहाँ चलू। अहाँ गोहारि लगाएब तँ कमला माइ घुरबे करतीह। हमरा सन पतितसँ कमला माइ सत्ते रूसि गेल छथि। अहाँक बात ओ नै कटतीह।'' एतबा कहि राजा उठलाह आ सोनचिड़ैक देल ठहुरीसँ ओहि परेतक ठठरीके हँसोथि देलनि। थोड़बे कालमे सत्ते ओ परेत एकटा कठमस्त जुआनक बानामे उलटा झुलए लागल। राजा सिमरक गाछपर चढ़ि ओकर पयरक बन्धन खोलि देलनि। मनुक्ख बनल ओ परेत राजा क आगाँमे कर जोड़ि ठाढ़ गए गेल। राजा ओकरा भरि पाँजमे ध' लेलनि।

तीनू गोटे पयरे महल घुरि अएलाह। पूब दिशा सिनुराए रहल छल। कमला माइक ओ सपूत कर जोड़ि' राजा आ रानी कें कहए लगलनि-

" हे राजा, हे रानी, जहिया परेत बनि घुमैत रही तँ मोन होअए जे अइ जिनगी सँ उद्धार भए जाइत, मुदा नहि आब नै। आब हम सभदिन परेते बनि क' रहए चाहै छी। कमला माइक अइ कोरा सँ बेसी सुख कतौ नै भेटत। हम एतहि रहब परेते बनल रहब। जहिया जहिया कमला भाइ रूसि जएतीह तहिया तहिया हुनका बाँसब। हमर बात मानती नै ते कि? आ हमरे किए? सभक बात मानतीह। माय कतौ बेटा सभसँ रुसलै-ए। ओह बतहियाके की बेटा सभक बिना चेन भेटतै। ओ रूसल नै अछि। हे देखू ने, हम बौसे ले' जाइ छी मुदा हे राजा, हे रानी, सप्पत मोन राखब।"

ओ मनुक्ख बनल परेत बताह जकाँ नाचए लागल आ खुनाओल जाइत पोखरि दिस दौड़ल। पोखरिक मोहारपर पहुँचल आ' चिकड़ए लागल- "घुरि आउ कमला... घुरि आउ कमला...।" आ फेर भोकाड़ि पाड़ि कानए लागल। बड़ी काल धरि कनैत रहल आ फेर एक उझुक डाकनि देलक- "नै अएबें ते' हमहूँ कहियो ने तकबौ कहियो नै।"

मोहारपर भीड़ लागि गेल। लोक ओकरा निछ्छ्ट्ट बताह बूझि रहल छल। थोड़बे कालमे लोक देखलक जे पोखरिक बीचमे नीचा सँ पानिक बमकोला छुटलै आ देखिते देखित आधा पोखरि पानि सँ भरि गेल। संगहि लोक देखलक जे ओ बतहा दौड़ल दौड़ल गेल आ ओहि पानिमे कूदि गेल। ओ ओतहि सँ चिचिआए- "लागल धुरि अएलीह कमला!!"

समाप्त